

## राजभाषा हिन्दी के संदर्भ में : प्रयोग एवं समस्याएँ



**Md Mazid Mia**

Research Scholar's , CSJM University, Kanpur (U.P.)

### Authors Short Profile

Md Mazid Mia is a Research Scholar in CSJM University, Kanpur (U.P.).

### Co-Author Details :

**Ghanshyam Pandey**

Supervisor's , CSJM University, Kanpur (U.P.)



### परिचय

भारतीय इतिहास के पृष्ठों पर भारत के स्वतंत्रता और आंदोलन से जुड़ा भाषा का प्रश्न अलग-अलग से प्रतीत होते हुए भी एक ही लक्ष्य बिन्दु पर पहुँचने वाले दो ऐसे मार्ग हैं जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही एक-दूसरे में समाहित होते दिखाई देते हैं। इसके साथ-साथ हिन्दी भाषा का आंदोलन मुख्यतः दो क्षेत्रों में प्रविष्ट होकर दो धाराओं में गतिशील होता है। एक धारा साहित्यिक परिवेश में खड़ी बोली तो दूसरी धारा राजनीति के बीच अंग्रेजी के खिलाफ 'निजभाषा' के रूप में हिन्दी आंदोलन की कड़ी नजर आती है। राजनेताओं ने अपनी पैनी दृष्टि और कुशाग्र बुद्धि से जहां विदेशी

शासकों के चंगुल से देश को स्वतंत्र करने का आंदोलन चलाया वहीं मानसिक गुलामी से उबरने के लिए निजभाषा अपनाने के राष्ट्रव्यापी अभियान की आवश्यकता महसूस की। परंतु भ्रमवश इस आंदोलन को तत्कालीन विद्वानों एवं आंदोलनकारियों ने 'राष्ट्रभाषा आंदोलन' की संज्ञा दे दी। इस संज्ञा ने इतना सशक्त रूप धारण कर लिया कि परवर्ती सभी विद्वानों ने भी इसे 'राष्ट्रभाषा आंदोलन' की संज्ञा दे दी। आंदोलन के प्रणेता व नायक राष्ट्रपिता ने भी हर मोड़ पर, हर मंच से हिन्दी के लिए राष्ट्रभाषा शब्द का प्रयोग किया। इसी आधार पर तत्कालीन व परवर्ती विद्वानों द्वारा 'राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ व समाधान' पर खूब चर्चा की गई। यदि विषय की गहराई व घटनाओं का समीप से अवलोकन करें तो एक बिन्दु जो स्पष्ट रूप से उभरकर आता है वह है कि इस आंदोलन कि जड़ अंग्रेजी शासकों के खिलाफ स्वशासक व भारतीय प्रशासन में आरोपित राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को बिठाने के उद्देश्य से इसका अनुप्राणित रहना और अंततः स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का पद दिया जाना, इस बात को प्रमाणित करते हैं कि हिन्दी का यह आंदोलन राष्ट्रभाषा का नहीं बल्कि राजभाषा का आंदोलन रहा है। आम जनता कि भाषा होने के कारण राष्ट्रभाषा के रूप में तो हिन्दी अपना स्थान पहले से ही बनाए हुए थी उसे शासन में प्रवेश करने के लिए फारसी व अंग्रेजी से जो संघर्ष करना पड़ा वह राजभाषा के रूप में रहा है।

सन 1976 में राजभाषा नियम के तहत भारत में स्थित बैंक में राजभाषा नीति लागू की गई। हिन्दी के संदर्भ में हुए आज तक के कार्यों से मात्र हिन्दी के राष्ट्रभाषायी रूप का आधा-अधूरा लेखा-जोखा मिलता है। बैंक में राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति के बारे में आरंभिक सूचनाएं तो प्राप्त होती हैं अथवा राजभाषा के क्षेत्र में इसके विकास, प्रचार-प्रसार के बारे में इधर-उधर बिखरे हुए प्रकरण व सरकार के द्वारा किए गए प्रयास एवं इसके द्वारा जारी आदेशों के माध्यम से उल्लेख मिलता है, जो सरकार या सरकारी कर्मचारियों तक ही सीमित रह जाता है। अपने देश की बैंक में राजभाषा नीति की जानकारी रखना किसी भी सजग नागरिक की लालसा स्वाभाविक हो सकती है। इसके लिए वांछनीय है कि इस विषय से संबंधित जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध हो ताकि जिज्ञासुओं को इधर-उधर भटकना न पड़े। संघ सरकार द्वारा हिन्दी को राजभाषा के रूप में संविधान में स्थान दिए जाने के पश्चात संविधान की भावना को पूरा करने के उद्देश्य से उसके प्रचार-प्रसार और स्थायित्व प्रदान करने के लिए अपनायी गई नीति, उसके प्रयोग व कार्यान्वयन के लिए गए प्रयासों का विवरण व उसमें अनेवाली विभिन्न समस्याओं का विवेचन प्रस्तुत किया जाए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में लादा नहीं गया, बल्कि इसकी विशेषताओं के कारण यह तर्क-वितर्क रूपी अग्नि-परीक्षा से गुजरकर कुंदन बनकर अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ संविधान की धाराओं में उतरी है।

### सारांश

आधुनिक समय में भारत वर्ष की भाषायी समस्या विश्व के अन्य किसी भी देश की भाषा समस्या से भिन्न और विकट है। क्षेत्रफल व जनसंख्या की दृष्टि से ही नहीं वरन भावनाओं के धरातल पर भी भारत एक उपमहाद्वीप है। देश में कितनी ही समृद्ध भाषाएँ हो, जब तक इसकी एक राजभाषा न हो तो देश गूंगा है। राजभाषा का संबंध राज तथा शासन से है। राजभाषा शासक, शासन और शासित के बीच की भाषा होती है, जब तक इनमें आपसी तालमेल के लिए समान भाषाप्रयोग नहीं होगा तब तक शासन कभी भी शासित के समीप नहीं आ सकता। उनके बीच एक दूरी बनी रहती है, और तब तक इनके बीच में संप्रेषण की समस्याएँ बनी रहती हैं। इस खाई को मिटाने व संप्रेषण की समस्या को दूर करने के उद्देश्य से ही आजादी के साथ ही हिन्दी को संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया तथा इसके प्रचारप्रसार का दायित्व संघ सरकार को सौंपा गया। यह अपेक्षा की गई कि - भाषाओं के विकास 18 संविधान की अष्टम अनुसूची में राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता प्राप्त अन्य साथ राजभाषा हिन्दी का विकास संघ स-के साथरकार सुनिश्चित करेगी। इस बहुभाषी राष्ट्र का यह अनुष्ठान आजादी के 67 वर्ष बाद भी अपेक्षित सीमा तक सफल नहीं हुआ है। इसके मूल में कई राजनीतिक, सामाजिक कारण हैं, जैसे भाषावर प्रांतों का गठन, भाषा को लेकर राजनीतिक दलों के गठन की प्रवृत्ति, आजीविका के मोह में व मानसिकता का शिकार होकर अबाध रूप से अंग्रेजी का प्रयोग, व्यक्तियों, समूहों, संस्थाओं, धर्मों में अन्य भाषा का परिवेश उपलब्ध होते हुए भी हिन्दी सीखने की

अनिच्छा इत्यादि कुछ मुख्य कारण है। जिनके चलते राजभाषा हिन्दी को अपेक्षित स्थान दिलाने के लिए असंख्य प्रयासों के बावजूद उद्देश्य पूरा नहीं हो सका है।

पिछले वर्ष ही हम स्वतंत्रता की 67वीं वर्षगांठ मनाये। इन वर्षों में हमने प्रौद्योगिकी, कृषि, विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्रों में आशातीत सफलता हमने प्राप्त की और कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हो गए। आत्मगौरव और आत्मनिर्भर की परंपरा के विकास के लिए हमने हिन्दी को राजभाषा बनाया, इसका मुख्य उद्देश्य था कि अपने देश में भी एक संपर्क भाषा हो तथा सारा काम - काज इसी भाषा में हो। आज भाषा का प्रश्न मात्र अभिव्यक्ति से नहीं बल्कि सांस्कृतिक, वाण्यजिक तथा सूचना प्रौद्योगिकी से भी गहरी है। आज बाज़ार की भाषा निःसंदेह रूप से हिन्दी है। आज लाभ के लिए ही सही विदेशी कंपनियों को हिन्दी सीखना पड़ रहा है तथा वे अपने उत्पादों को भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही बेच रहे हैं जिसका प्रमाण दूरदर्शन पर दिखाये जा रहे विज्ञापन से लेकर इन पर आने वाले कार्यक्रमों में देखा जा सकता है। पर प्रश्न यह उठता है कि हम अभी तक कार्यालयों में हिन्दी को यथोचित स्थान नहीं दे पाए हैं। इस प्रश्न पर आज गौर करना आवश्यक है।

### विषय का स्पष्टीकरण

राजभाषा का प्रकरण अलगसा दिखाई देता है किन्तु इसके तथ्यों -अलग दिशाओं में उलझा हुआ व विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन करने से इसके मूल में जो समस्याएँ उजागर होती हैं वे ऐसी प्रतीत नहीं होती जिनका निदान उपलब्ध न हो। यदि कुछ देर के लिए राजनीतिक आकांक्षाओं, संकीर्ण स्वार्थों, क्षेत्रीयता से प्रभावित विभिन्न भाषा-भाषियों की मनोवृत्ति, अनिष्ट के भय से एक वर्ग विशेष के प्रभावी होने की आशंका और आत्महीनता के कारण अंग्रेजी के प्रति मोह को राजभाषा हिन्दी के कंटकाकीर्ण मार्ग से हटा दिया जाए तो एक चमत्कारिक ढंग से हिन्दी सर्व स्वीकार्य भाषा के रूप में समझ आ जाती है। अनेक योजनाओं और प्रोत्साहनों के बावजूद आज के भारतीय समाज में प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी के प्रति न तो अपेक्षित, उत्साह है और न उतना लगाव जो उन्हें अंग्रेजी के समर्थ और अनिवार्य प्रतिद्वंदी के रूप में खड़ा कर सके। केंद्रीय सरकार की राजभाषा के प्रचारप्रसार की - योजनाएँ, स्वयं सेवी व अन्य संस्थाओं के हिन्दी प्रचार संबंधी प्रयास, शिक्षा तंत्र में त्रिभाषा फार्मूला, भाषायी आयोग, नियम, अधिनियम, संकल्प, कार्यक्रम यथाशक्ति हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा के रूप में आगे बढ़ाने में लगे हैं। परंतु प्रगति अपेक्षाकृत बहुत धीमी हैं और उपरोक्त कारण इसके मूल में बहुत बड़ा अवरोध बने हुए हैं।

प्रस्तुत शोध के लिए किए गए समग्र अध्ययन से जो निष्कर्ष सामने आएंगे उनके बारे में कहा जा सकता है कि देश का सामूहिक नेतृत्व चारों दिशाओं से एक ध्वनि के साथ, अनेक स्तरों से पूर्ण निष्ठा व दृढ़ निश्चय के साथ बैंक में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग पर जब तक बल नहीं देगा तब तक कोई भी प्रोत्साहन व प्रलोभन कारगर सिद्ध नहीं होंगे। बैंक के अधिकारियों, लिपिकों, तथा विश्वविद्यालय,

कालेज व स्कूल का अध्यापक, देश का इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, व्यापारी, सरकारी व गैरसरकारी - क्षेत्र, कारखाने का मजदूर आदि सब नियमों व अधिनियमों के अधिन नहीं बल्कि मन से हिन्दी को स्वीकार करेंगे तो व्यापार के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव पड़ेगा और समूचे देश में एक समृद्ध वातावरण बनेगा व छात्र, कर्मकारी, वृद्ध, युवक सभी का मनोबल बढ़ने लगेगा। इन सभी बिंदुओं को लेकर प्रस्तुत शोधप्रबंध में अध्ययन और विवेचन के आधार पर निम्नलिखित अध्यायों के बल पर विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

### विश्व में हिन्दी का प्रयोग

वर्तमान में देखा जाये तो आज हिन्दी हमारे देश में ही नहीं पूरे जगत में मिसाल कायम करने वाली भाषा है, हिन्दी का यह विशाल क्षेत्र मध्य वर्ग को लेकर बनी है। पिछले कुछ वर्षों में मध्य वर्ग की क्रय शक्ति बढ़ने के कारण वें अपनी कमाई का अधिक से अधिक हिस्सा विश्व बाजार में खर्च करते हैं। जिस के कारण आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने माल की गुणवत्ता के प्रचार के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। हिन्दी भाषा की व्यापकता को देखते हुए कंपनियाँ हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं जिससे हिन्दी की शक्ति दिन व दिन बढ़ती ही जा रही है। हमारे देश में हिन्दी की चाहे जो भी दशा हो पर विश्व के अन्य देश हिन्दी को अपनी तरक्की और मुनाफे के लिए अधिक से अधिक प्रयोग कर रहे हैं। भारतियों की वर्तमान और भविष्य को देखते हुए आज विश्व बाजार में भारतियों से सम्पर्क बनाने के लिए विश्व के व्यापारी अपने कर्मचारियों को हिन्दी सिखने के लिए अधिक से अधिक रूपय खर्च कर रहे हैं। जैसे कुछ दिन पहले अमेरिका ने अपने लोगों को हिन्दी सिखाने के लिए सैकड़ों मिलियन डोलर खर्च की, इससे पता चलता है कि आज विश्व में हिन्दी का क्या महत्व है? आज विश्व के लोग हिन्दी को बहुत गंभीरता से ले रहे हैं और यहाँ अपने ही देश में हिन्दी की क्या दशा हो रही है। आज विश्व में चाहे वह कम्प्यूटर हो या विज्ञान हर क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग इतनी तेजी से हो रहा है कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। हमें सिर्फ करना इतना है कि हम जीतने भी हिन्दी भाषी साहित्यकार, संपादक, राजभाषा अधिकारी, जो कोई भी हो हमें हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा तब जाकर हिन्दी राज्यभाषा राजभाषा से भी आगे विश्व भाषा के रूप में चमकेगी। - संपर्कभाषा -

### हिन्दी के भाषा रूप का विकास

हिन्दी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, और भारत गणराज्य के प्राथमिक आधिकारिक भाषा है। देशी वक्ताओं की संख्या के अनुसार, हिन्दी विश्व में चौथा सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, अंग्रेजी के बाद (तृतीय), स्पेनिश और चीनी इस तरह की रैंकिंग लगभग जाहिर है, कर रहे हैं। यदि हिन्दी और हिन्दी बोलियों की गैर देशी वक्ताओं में शामिल हैं, हिन्दी शायद दूसरी या तीसरी दुनिया में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह

अनुमान करना मुश्किल है कि कितने भारतीयों को उनके अपर्याप्त जनगणना के आंकड़ों की वजह से देशी या दूसरी भाषा के रूप में हिंदी बोलते हैं। हालांकि, यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि भारत एक विविधता वाली देश है जहाँ कई भाषाओं में बात की जाती है, और इस तरह सभी भारतीयों हिंदी नहीं बोल और समझ पाती है। हिन्दी भारत के उत्तरमध्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से बोली जाती है- जबकि दक्षिण भारत में बहुत कम व्यापक रूप से बोली जाती है। भारत के मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के राज्यों में हिन्दी प्राथमिक भाषा के रूप में बोली जाती है। इसके अलावा हिन्दी दुनिया भर के कई अन्य देशों में बोली जाती है। भारतीय प्रवासियों की एक बड़ी संख्या में ब्रिटेन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा, और दक्षिण अफ्रीका जैसे अंग्रेजी भाषी क्षेत्रों में रहते हैं। जो पड़ोसी देशों भारत, बांग्लादेश और नेपाल के रूप में हिंदी बोली जाती है। हिंदी और उर्दू के बाद से अनिवार्य रूप से एक ही भाषा, हिन्दी पाकिस्तान में भी बोली जाती है।

### *अन्तराष्ट्रिय जगत में हिन्दी*

बीसवीं शदी के अंतिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तराष्ट्रिय विकास बहुत तेजी से हुआ है। वेब विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिन्दी की मांग जिस तेजी से बढ़ी है वैसी किसी और भाषा में नहीं। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों तथा सैकड़ों छोटे-बड़े केंद्रों में विश्वविद्यालय से लेकर शोध स्तर तक हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है। आज लगभग 25 से अधिक हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ विदेशों में नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। यू.ए.ई के 'हम एफ एम' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डायचे वेले, जापान के एनेचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

### *हिन्दी की आवश्यकता*

हिन्दी भाषा और इसमें निहित भारत की सांस्कृतिक धरोहर इतनी सुदृढ़ और समृद्ध है कि इस ओर अधिक प्रयत्न न किए जाने पर भी विकास की गति बहुत तेज है। ध्यान योग और आयुर्वेद विषयों के साथ-साथ इनसे संबन्धित हिन्दी शब्दों का भी विश्व की दूसरी भाषाओं में विलय हो रहा है। भारतीय संगीत, हस्तकला, भविजन और वस्त्रों की विदेशी मांग जैसी आज है पहले कभी नहीं थी। लगभग हर देश में योग, ध्यान और आयुर्वेद के केंद्र खुल रहे हैं जो दुनिया भर के लोगों को भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित करते हैं। ऐसी संस्कृति जिसे पाने के लिए हिन्दी के रास्ते से ही पहुंचा जा सकता है।

### लोकप्रियता की मिसाल

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के सेवानिवृत्त निर्देशक प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने अपने आलेख में हिन्दी की विश्व व्यापी लोकप्रियता का प्रतिपादन करते हुए यह अभिमत व्यक्त किया है कि हिन्दी की फिल्मों, गानों, टी.वी. कार्यक्रमों ने हिन्दी को जीतना लोकप्रिय बनाया है, इसका आकलन करना कठिन है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में हिन्दी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की, कि हिन्दी फिल्मों को देखकर तथा हिन्दी फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली। लेखक ने स्वयं जिन देशों की यात्रा की तथा जीतने विदेशी नागरिकों से बातचीत की उनसे उन्हें जो अनुभव हुआ उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी की फिल्मी गानों ने हिन्दी के प्रसार में अप्रतिम योगदान दिया है। सन 1995 के बाद से टी.वी. के चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों की लोकप्रियता भी बढ़ी है। इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जिन सेडेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरंभ केवल अँग्रेजी भाषा से किया था, उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा है। अब स्टार प्लस, जी.टी.वी., जी न्यूज, स्टार न्यूज, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि टी.वी. चैनल अपने कार्यक्रम हिन्दी में दे रहे हैं।

‘कौन बनेगा करोड़पति’ की लोकप्रियता ने मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी के झंडे गाड़ दिए, कमाई तथा प्रसिद्धि के अनेक कीर्तिमान भंग कर दिए तथा आने वाले समय में हिन्दी के सुखद भविष्य के सपने जगा दिए हैं। आज सभी चैनल तथा फिल्म निर्माता अँग्रेजी कार्यक्रमों और फिल्मों को हिन्दी में रूपांतरित करके प्रस्तुत करने लगे हैं। जुरासिक पार्क जैसी अति प्रसिद्ध फिल्म को भी अधिक मुनाफे के लिए हिन्दी में रूपांतरित किया जाना जरूरी हो गया। इसके हिन्दी संस्करण ने भारत में इतने पैसे कमाए जीतने अँग्रेजी संस्करण ने पूरे विश्व में नहीं कमाए थे। आज भारत में सर्वाधिक पत्र-पत्रिकाएँ तथा उनके पाठक हिन्दी के हैं। सर्वाधिक फिल्में हिन्दी में बनती हैं।

### हिन्दी की शक्ति एवं सामर्थ्य

हिन्दी भारत की ही नहीं, पूरे विश्व में एक विशाल क्षेत्र की भाषा है। यह विशाल क्षेत्र अधिकतर मध्यम वर्ग को अपने में समेटे हुए है। इस मध्यम वर्ग की क्रयशक्ति पिछले कुछ वर्षों में बहुत बढ़ी है। खाड़ी देशों का मजदूर वर्ग जो भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि देशों से आता है सबसे अधिक सहजता हिन्दी बोलने में समझता है। वह यहाँ सादा जीवन जीता है लेकिन अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा अन्तराष्ट्रिय उत्पादों की खरीद में व्यय करता है। आज अपने माल के प्रचार-प्रसार, पैकिंग, गुणवत्ता आदि के लिए हिन्दी को अपनाया बहुराष्ट्रीय कंपनियों की विवशता है और उनकी यही विवशता हिन्दी की शक्ति एवं सामर्थ्य की द्योतक है।



## हिन्दी के प्रति गंभीर दुनिया

भारतियों ने अपनी कड़ी मेहनत, प्रतिभा और कुशाग्र बुद्धि से आज विश्व के तमाम देशों की उन्नति में जो सहायता की है उससे प्रभावित होकर वे लोग समझ गए हैं कि भारतियों से अच्छे संबंध बनाने के लिए हिन्दी सीखना कितना जरूरी है। हल ही में अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने 114 मिलियन डॉलर की एक विशेष राशि अमरीका में हिन्दी, चीनी और अरबी भाषाएँ सीखने के लिए स्वीकृत की है। इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी के महत्व को विश्व में कितनी गंभीरता से अनुभव किया जा रहा है। आज हिन्दी ने कंप्यूटर के क्षेत्र में अँग्रेजी का वर्चस्व तोड़ डाला है हिन्दी भाषी करोड़ों की आबादी कंप्यूटर का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी के प्राध्यापक, साहित्यकार, संपादक एवं प्रकाशक कंप्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग करें और इसके सर्वांगीण विकास के लिए कदम बढ़ाएं। प्रवासी भारतियों में हजारों लोग हिन्दी के विकास में संलग्न हैं। जिसमें से तीन सौ से अधिक से आप वेब पर संपर्क स्थापित कर सकते हैं। धैर्य के साथ इनसे संपर्क बनाते हुए बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

## उपसंहार

इस प्रकार के तमाम उदाहरण खोजे जा सकते हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि वास्तव में अँग्रेजी ही देश पर राज कर रही है, और आगे भी करती रहेगी। 'क्यों ऐसा है' का तार्किक कारण कोई नहीं दे सकता है। कुतर्कों के जाल में प्रश्नकर्ता को फंसाने की कोशिशें सभी करते हैं। दरअसल देशवासियों के लिए अँग्रेजी एक उपयोगी भाषा ही नहीं है यह सामाजिक प्रतिष्ठा और उन्नति का द्योतक भी है। यह धारणा सर्वत्र घर कर चुकी है कि अन्य कोई भाषा सीखी जाए या नहीं, अँग्रेजी अवश्य सीखी जानी चाहिए। अँग्रेजी माध्यम विद्यालयों का माहौल तो छात्रों को यही संदेश देता है। अँग्रेजी की श्रेष्ठता एवं देशज भाषाओं की हीनता की भावना तो देश के नौनिहालों के दिमाग में उनकी शिक्षा के साथ ही बिठा दी जाती है। मेरे देखने में तो यही आ रहा है कि हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाएं महज बोलने की भाषाएं बनती जा रही हैं। लिखित रूप में वे पत्र-पत्रिकाओं एवं कतिपय साहित्यिक कृतियों तक सिमट रही हैं। रोजमर्रा के आम जीवन का दस्तावेजी कामकाज तो अँग्रेजी में ही चल रहा है। कहने का अर्थ है कि सहायक राजभाषा होने के बावजूद अँग्रेजी ही देश की असली राजभाषा बनी हुई है।

## संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी उद्भव -, विकास और रूप किताब महल - हरदेव बाहरी .डॉ -, पृ .57
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास 54 पृष्ठ -बच्चन सिंह लोकभारती प्रकाशन -
3. भाषा विज्ञान 211 किताब महल - भोलानाथ तिवारी .दो -

4. भाषाकपिलदेव द्विवेदी .डॉ - शस्त्र-विज्ञान एवं भाषा-, पृ .36
5. हिन्दी भाषा का समाज शस्त्र रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव -, पृ .93-94
6. हिन्दी सब संसार सुरेश ऋतुपर्णा .प्रो - संपादक -, पृ .95-97
7. आधुनिक भाषा विज्ञान राजमणि शर्मा .डॉ -, पृ .21-22
8. भाषा विज्ञान रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव - सैद्धांतिक चिंतन :, पृ .42-43
9. भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा और लिपि रामकिशोर शर्मा .डॉ -, पृ .12-13